ISSN 0973-2616

सी एस आई आर समाचार

वर्ष 25 अंक 11 नवम्बर 2008

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक
अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

सीमेरी द्वारा विकसित सौर रिक्शा सोलेकशॉ का दिल्ली में शुभारम्भ किया गया

केन्द्रीय यान्त्रिक अभियान्त्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीमेरी), दुर्गापुर द्वारा विकसित सौर साइकिल रिक्शा - हरित रिक्शा, जिसे **सोलेकशॉ** का नाम दिया गया है, का महात्मा गांधी की जन्मतिथि 2 अक्टूबर 2008 को चांदनी चौक, दिल्ली में शुभारम्भ किया गया। इस उद्घाटन समारोह में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा सीएसआईआर के महानिदेशक प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

केन्द्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित सौर ऊर्जा चालित रिक्शे पर दिल्ली में शुभारम्भ के पश्चात यात्रा करते हुए।

सोलेकशॉ के विकास के विषय में बताते हुए श्री कपिल सिब्बल ने कहा कि यहां ऐसे शहरी परिवहन की आवश्यकता है जो आरामदायक तथा गरीबों की पहुंच में हो। सोलेकशॉ उनके लिए नैनो होगा।

श्रीमती शीला दीक्षित ने कहा, यह परिवहन का एक सशक्त माध्यम है जो स्वच्छ ऊर्जा पर कार्य करता है।

210 किलोग्राम भार का यह हरित रिक्शा 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चल सकता है। सीमेरी द्वारा आठ माह में विकसित यह रिक्शा बैटरी से चलता है। श्री ए. राव ने बताया कि रिक्शे में अन्तर्निहित बैटरी सौर ऊर्जा से आवेशित यानी चार्ज होती है। इसमें ऊर्जा, रिक्शे की एक गियर प्रणाली में संचारित हो जाती है जो रिक्शे के तीनों पहियों को गति प्रदान करती है। यद्यपि रिक्शा चलाते समय पैडल लगाने की आवश्यकता नहीं होती पर पैडल चलाने से सोलेकशॉ को ऊर्जा मिलेगी। सोलेकशा विकसित करने वाले दल के सदस्य श्री ए. राव ने बताया कि सोलेकशॉ सर्वव्यापक साइकिल रिक्शा का एक पुनः अभिकल्पित रूप है जो सीमेरी द्वारा प्रदत्त विशिष्टताओं के आधार पर क्रॉम्पटन ग्रीव्स द्वारा विकसित एक रोबस्ट लो पावर हाईटॉर्क ब्रशलैश डीसी मोटर से युक्त है।

बैटरी रीचार्ज स्टेशन, जिसमें एक केन्द्रीय सोलर पैनल लगा होता है, को चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन के पास स्थापित किया गया है। बैटरी को चार्ज किये जाने के समय रिक्शा चालक को एक वैकल्पिक बैटरी भी प्रदान की जाएगी। बैटरी को पुनः चार्ज कराने के लिए 45 रुपये की लागत आएगी। एक आवेशित बैटरी से 70 किलोमीटर तक रिक्शा चलाया जा सकता है। चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन के 3 किलोमीटर के दायरे में नमूना परियोजना के रूप में आरम्भ करने के पश्चात इन्हें बाद में शहर के अन्य क्षेत्रों में भी आरम्भ किया जायेगा।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने कहा कि सोलेकशॉ का नवीनतम रूप एक बेहतर विकल्प होगा तथा इसकी गति 15 किलोमीटर घंटा होगी तथा इसे वर्ष 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों के आरम्भ होने से पूर्व ही पूर्ण रूप से आरम्भ कर दिया जायेगा। इसके पेडीसेल समतल तथा चढ़ाई वाली सड़कों पर चलाने में आसान हैं। सोलेकशॉ को इससे पूर्व 17 अगस्त को दुर्गापुर में झंडी दिखाई गयी थी।

प्रो. ब्रह्मचारी ने आगे कहा, रिक्शे के डिजाइन की कोई भी नकल कर सकता है परन्तु गुणवत्ता नियंत्रण किया जायेगा। हम आशा करते हैं कि रिक्शे का मूल्य लगभग वर्तमान रिक्शे के बराबर अर्थात लगभग 7000 के करीब होगा क्योंकि हमें इनके लिए कार्बन क्रेडिट अर्जित करने हैं।

डॉ. गोपाल सिन्हा, पूर्व निदेशक, सीमेरी ने टिप्पणी की कि सोलेकशॉ मजबूत है तथा रिक्शा खींचने के नीरस कार्य को हटाने के लिए श्रमदक्षता शास्त्र के अनुसार अभिकल्पित किया गया है। सीएसआईआर वर्तमान में रिक्शा चलाने की परिवर्तित सम्भावनाओं को तलाश रहा है ताकि इन्हें बैटरी चालित बनाया जा सके।

एनआईआईएसटी की वर्तमान परियोजनाएं

क्रम सं.	परियोजना शीर्षक
1.	स्टडीज ऑन दी प्रोडक्शन, कैरेक्टराइजेशन एण्ड एप्लीकेशन ऑफ कोल्ड एक्टिव बी-गैलेक्टोसाइड-ए थेराप्यूटिक एजेन्ट फॉर लेक्टोस इन्टॉलरेन्स
2.	मोनोलिपिड्स एण्ड मोनोमेटाबोलिज्म इन माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरक्युलोसिस
3.	मेटाबोलिक एक्टीविटीज एण्ड जैनेटिक मेनीपुलेशन लीडिंग टू न्यूट्रास्यूटिकल प्रोडक्शन फ्रॉम लेक्टिक एसिड बैक्टीरिया फॉर नोबल एप्लीकेशन
4.	बायोकैटेलिस्ट्स-ए नोबल अप्रोच फॉर दी प्रोडक्शन ऑफ फार्मास्यूटिकल्स
5.	डवलपमैंट ऑफ एफीशियेन्ट प्रोबायोटिक टू कॉम्बैट विटामिन बी, फोलिक एसिड एण्ड आयरन डेफिशियेन्सी
6.	यूटीलाइजेशन ऑफ ब्राऊन कोयर वेस्ट पिथ फॉर लिग्निन डीग्रेडिंग एन्जाइम्स एण्ड डवलपमैंट ऑफ वैल्यू एडेड प्रोडक्ट्स फ्रॉम फरमेन्टेड वेस्ट पिथ
7.	माइक्रोबियल मीडियेटेड रिमूवल ऑफ ऑयरन मिनरल इम्प्यूरिटीज फ्रॉम क्योलिन फॉर वैल्यू एडेड एडीशन
8.	प्रोडक्शन, कैरेक्टराइजेशन एण्ड एप्लीकेशन्स ऑफ एल्फा गैलेक्टोसाइड्स-ए थेराप्यूटिकल एन्जाइम फॉर फ्लैटुलैन्स
9.	कन्स्ट्रक्शन एण्ड स्क्रीनिंग ऑफ एन्वारयरनमैंटल डीएनए लाइब्रेरीज फॉर नोबल बीटा लैक्टेमेस इन्हीबिटर्स एण्ड लाइपेज
10.	बायोएथनॉल फ्रॉम लिग्नो सेलुलोसिक बायोमास
11.	आइसोलेशन क्लोनिंग ऑफ ग्लूकोज टोलरेन्स बीटा ग्लूकोसाइड्स फ्रॉम फंगल आइसोलेट बीटीसीएफ - 5 एण्ड दी सीबीएचआई कण्ट्रोल एलीमेन्ट्स फ्रॉम ट्राइकोडर्मा रेसिसी एण्ड दी स्टडीज ऑन दी प्रोपर्टीज ऑफ दी एन्जाइम
12.	डवलपमैंट ऑफ थरमोस्टेबल एण्ड पीएच टॉलरेन्स फाइटेस फ्रॉम **एस्परजिलस नाइज़र** यूजिंग साइट डिरेक्टेड म्यूटॉजेनिसिस
13.	आइसोलेशन एण्ड इवेल्युएशन ऑफ माइक्रोबियल स्ट्रेन्स फॉर दी प्रोडक्शन ऑफ नाइट्रिलेज, रिडक्टेज एण्ड हाइडान्टोयिनिसेस
14.	कंस्ट्रक्शन एण्ड एनालिसिस ऑफ रीकॉम्बिनेन्ट पेन्टोस यूटिलाइजिंग **कोरिनेबैक्टीरियम** स्ट्रेन्स फॉर एमिनो एसिड प्रोडक्शन फ्रॉम हेमीसेलुलोज कण्टेनिंग एग्रो वेस्ट मैटिरयल्स

नीरा की निधानी आयु में बढ़ोतरी

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला ने नीरा की जीवनावधि को बढ़ाने के लिए एक प्रक्रिया विकसित की है। नीरा एक पारम्परिक ग्रामीण पेय पदार्थ है जो पनई ताड़, साबूदाना या खजूर के रस से तैयार किया जाता है। भारत में पाए जाने वाले लगभग 17 करोड़ ताड़ और खजूर के वृक्षों में से केवल 35 प्रतिशत से ही नीरा तैयार किया जाता है। 70 प्रतिशत से अधिक वृक्ष इस कार्य हेतु प्रयोग में नहीं लाए जाते हैं।

नीरा एक पोषक पेय पदार्थ है जिसकी निधानी आयु यानी शेल्फ लाइफ केवल कुछ घंटों की होती है। इसीलिए समुद्रतटीय क्षेत्रों में, जहां इसका उत्पादन होता है, वहीं उसके आसपास के सीमित क्षेत्र में ही इसका उपभोग शीघ्रता से कर लिया जाता है। यदि नीरा को अत्यधिक ठंडे तापमान में न रखा जाए तो इसके उत्पादन के कुछ घण्टों के अन्दर ही बैक्टीरिया और खमीर (यीस्ट) इस पर किण्वन की प्रतिक्रिया करके इसे ताड़ी में परिवर्तित कर देते हैं। एनसीएल में विकसित की गई झिल्ली निस्यन्दन तकनीक से नीरा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणुओं को दूर कर दिया जाता है। इस तकनीक से उसकी गुणवत्ता में भी कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। इस तकनीक के प्रयोग द्वारा नीरा की निधानी आयु में बढ़ोतरी संभव हो सकी है। इस स्थिति में यदि इसे 4 से 8 डिग्री सेल्सियस के तापमान में रखा जाए तो यह 45 दिनों तक उपयोग में लाया जा सकता है।

जीएनएमडीटीसी, डहाणु में नीरा फिल्ट्रेशन फैसिलिटी

एनसीएल ने महाराष्ट्र के ठाणे जिले में स्थित डहाणु में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के गजानन नाइक बहुविधात्मक प्रशिक्षण केन्द्र में एक प्रायोगिक संयंत्र स्थापित किया है। इस संयंत्र में 500 लीटर तक नीरा प्रतिदिन निर्माण करने की क्षमता है। इस संयंत्र की स्थापना 3 मई, 2008 को की गई थी। 200 मिलीलीटर नीरा के प्रतिदिन लगभग 1500 पाउच तैयार करके डहाणु में खादी एवं ग्रामोद्योग की फुटकर दुकानों में भेजे जाते हैं। जिनकी बिक्री हाथोंहाथ हो जाती है। यह उत्पाद उपयुक्त प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्रामीण पेय पदार्थ की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में की गई नई पहल का प्रतिनिधित्व करता है।

गुजरात नीरा फेडरेशन सरोंदा में स्थापित नीरा फिल्ट्रेशन संयंत्र

गुजरात नीरा फेडरेशन ने जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली तथा खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग की सहायता से एनसीएल द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी पर आधारित एक दूसरे प्रायोगिक संयंत्र की स्थापना 14 मई, 2008 को की। इस संयंत्र में भी प्रतिदिन 3000 लीटर नीरा शोधित करने की क्षमता है। नीरा को 20 लीटर के पैक में सफलतापूर्वक बाजार में लाया गया है। इस संयंत्र की क्षमता को प्रतिदिन 10,000 लीटर तक बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

नीरा को झिल्ली प्रक्रिया द्वारा शोधित करने से उत्पाद में 15 से 20 प्रतिशत की कुल बचत होती है। इससे नीरा उत्पादकों की आय में वृद्धि होगी। गुजरात नीरा फेडरेशन का यह आकलन है कि वर्तमान नीरा शोधन संयंत्र के कारण आगामी उत्पादन-समय में लगभग 1200 अतिरिक्त लोगों को काम मिलेगा। इस प्रौद्योगिकी से सारे देश में फैले खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के कम से कम 14 और केन्द्रों को लाभ मिलेगा। एनसीएल तथा एसएनडीटी विश्वविद्यालय, मुम्बई में किए गए विश्लेषणों से यह सिद्ध होता है कि नीरा एक अत्यन्त पोषक पेय पदार्थ है और इसका उपयोग किशोरावस्था के बच्चे तथा भावी माताएं कर सकती हैं।

बेहतर स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए पर्यावरण में उत्तम सुधार के लिए हरित मार्ग पर सीमैप के कदमों को वैश्विक मान्यता/प्रशंसा/पहचान

योजनाबद्ध कृषि निवेश विकास तथा फार्म रासायनिक प्रदूषण की रोकथाम के द्वारा पर्यावरण में सुधार के प्रयासों के लिये सीमैप को प्रतिष्ठित **पीकॉक इको इनोवेशन अवार्ड 2008** प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार पर्यावरण प्रबन्धन तथा परिस्थितिकी नेतृत्व में उत्कृष्टता का पवित्र प्रतीक है। कुल मिलाकर विभिन्न श्रेणियों में गोल्डन पीकॉक अवार्ड के लिए 225 नामांकन प्राप्त हुए थे। इसका मूल्यांकन स्वतन्त्र विशेषज्ञों के एक दल द्वारा किया गया तथा न्यायमूर्ति पी.एन. भगवती, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के सदस्य के नेतृत्व में एक निर्णायक मण्डल द्वारा अन्तिम रूप दिया गया।

गोल्डन पीकॉक प्रशस्ति पत्र

गोल्डन पीकॉक इको इनोवेशन अवार्ड शील्ड

प्रस्तावों का मूल्यांकन करते समय निर्णायक मंडल ने उपयोगकर्ता समुदाय तथा जनसामान्य की **अन अभिव्यक्त इच्छाओं तथा अस्पष्ट आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए विशेष उत्पादों तथा सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए सम्पूर्ण पारिस्थितिकी अन्वेषण** की ओर अधिक ध्यान दिया। गोल्डन पीकॉक इको इनोवेशन अवार्ड गहन आर एंड डी प्रयासों के द्वारा अपक्षयित होते पर्यावरण को समृद्ध बनाने के सीमैप के उद्यमों का प्रमाण है जो न केवल सुरक्षित तथा स्वस्थ पर्यावरण की ओर अग्रसर करेगा अपितु आर्थिक तथा सामाजिक लाभों को भी बढ़ावा देगा। यह पुरस्कार सीमैप के प्रयासों (अ) कृषि के क्षेत्र में रसायनों के व्यवहार्य विकल्प के रूप में जैव उर्वरकों तथा जैव नाशक जीवों को प्रोत्साहन देना, (ब) कृषि व्यर्थ को लाभदायक हरित स्वर्ण उत्पादों में परिवर्तित करना (स) प्रभावशाली पर्यावरणीय मॉनीटरन के लिए पादप जैव संवेदकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करना (द) पर्यावरण मित्र यानी इको फ्रैण्डली नाइट्रोजन रिलीजिंग यूरिया के विकास के द्वारा उर्वरक उपयोग क्षमता को तीन गुना बढ़ाना तथा (इ) विशिष्ट औषधीय तथा सगंध फसल के द्वारा नमक तथा भारी धातु से प्रभावित भूमि का परिस्थितिकी सुरक्षित जैव उपचार - प्रभावी ढंग से पर्यावरण में सुधार लाने में सहायता के द्वारा सीमैप को महत्वपूर्ण पहचान दिलाने में सफल हुआ है।

सीमैप के लिए, जो पहले ही अपने पर्यावरण संरक्षित कृषि आधारित पर्यावरण प्रौद्योगिकियों (भारतीय, अमेरिकी तथा यूरोपियन यूनियन मानकों के अनुरूप) के द्वारा ईसीओसीईएसटी प्रमाणपत्र से अधिकृत किया जा चुका है, के लिये यह पुरस्कार बेहतर स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए हरित पथ का अनुकरण कर वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय सुधार की ओर सीमैप की वचनबद्धता की ओर मान्यता दिलाता है। सीमैप के पास ग्यारह पेटेण्ट है जो विशेष रूप से अपनी हरित प्रौद्योगिकियों के द्वारा पर्यावरण को बचाने, सुरक्षित करने, सुधारने तथा इसे बढ़ाने के क्षेत्र में हैं।

यह पुरस्कार पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में अभी हाल ही में पर्यावरण परिवर्तन पर आधारित एक रंगारंग समारोह में जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित थे, के दौरान डॉ. ओला उल्लुस्टेन, प्रधानमंत्री, स्वीडन तथा अध्यक्ष, वर्ल्ड कमीशन ऑन फॉरेस्ट द्वारा प्रदान किया गया। समारोह में प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. रंजन दत्ता तथा प्रो. वी.एल. चोपड़ा, सदस्य, योजना आयोग भी उपस्थित थे। इस विश्व स्तर के सम्मेलन का आयोजन वर्ल्ड एन्वायरनमैंट फाऊन्डेशन द्वारा किया गया।

सड़क सुरक्षा विषय पर हिन्दी में कार्यशाला

केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में सड़क सुरक्षा विषय पर हिन्दी में कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री एस.एन. श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त पुलिस (यातायात) कार्यशाला के मुख्य अतिथि थे। इस कार्यशाला में संस्थान तथा बाहर के लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा एक मुख्य व्याख्यान के अलावा सड़क सुरक्षा से संबंधित दो प्रस्तुतीकरण दिए गए।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. एस.एम. सरीन, निदेशक ग्रेड, पूर्व वैज्ञानिक एवं सड़क सुरक्षा के विशेषज्ञ ने **सड़क सुरक्षाः किसकी समस्या किसकी जिम्मेदारी** विषय पर सारगर्भित प्रस्तुतिकरण दिया।

डॉ. निशि मित्तल, वैज्ञानिक, यातायात व परिवहन प्रभाग ने **उदासीनता-पदयात्रियों के प्रति** विषय पर और डॉ. नीलिमा चक्रवर्ती, वैज्ञानिक, यातायात व परिवहन प्रभाग ने **शारीरिक व मानसिक रूप से असहज सड़क उपभोक्ताओं के समान अधिकार व उनकी सुरक्षा** विषय पर रोचक व ज्ञानवर्द्धक प्रस्तुतीकरण किया। कार्यक्रम में सड़क सुरक्षा से संबंधित **नो मोबाइल व्हाइल मोबाइल** नामक फिल्म दिखाई गई।

श्री टी.के. आमला, वैज्ञानिक ने कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में चर्चा करते हुए कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, सीआरआरआई ने किया। मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उन्होंने सड़क सुरक्षा से सबंधित विभिन्न विषयों की ओर ध्यानाकर्षित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि सड़क दुर्घटना संबंधी आंकड़ों के सूचना पट्ट दिल्ली में अलग-अलग स्थानों पर भी लगाए जाने चाहिए। सड़क यातायात में अनुशासन की कमी की ओर ध्यान दिलाते हुए इस कमी को दूर करने, अनुशासन बनाए जाने और उसमें वृद्धि पर जोर दिया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री एस.एन. श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त पुलिस (यातायात) ने अपने वक्तव्य में बताया कि असावधानी के कारण प्रतिवर्ष 2000 लोगों की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। इन्हें कम करने का यातायात पुलिस हरसंभव प्रयास कर रही है। गत वर्ष सड़क दुर्घटनाओं में 20-25 प्रतिशत कमी लाने का लक्ष्य रखा गया जिसे उस समय उच्च लक्ष्य माना गया परन्तु इसके परिणामस्वरूप पैदल यात्रियों की दुर्घटनाओं में 17 प्रतिशत की कमी आई है।

उन्होंने बताया कि सड़क दुर्घटना में मरने वाले 50 प्रतिशत पैदल यात्री होते हैं। रिक्शा चालक, स्कूटर व मोटरसाइकिल सवारों की दुर्घटना में मृत्यु होने का प्रतिशत 35 के लगभग अर्थात पैदल यात्री व दुपहिया वाहन सवारों की दुर्घटना में मृत्यु लगभग 85 प्रतिशत है। लेकिन इनके लिए अलग से कोई सड़क पर लेन नहीं होती।

उन्होंने फ्लाईओवरों पर पैदल यात्रियों और साइकिल सवारों के लिए लेन न होने तथा इसकी आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित किया। सड़क सुरक्षा की दृष्टि से सड़कों पर संकेत के चिह्न सही लगाने और आवश्यकतानुसार निश्चित अन्तराल पर लगाने पर बल दिया। सबवे और उपरिगामी सेतु के उपयोग करने में बूढ़ों और महिलाओं की कठिनाइयों की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्होंने कहा कि

डॉ. एस. गंगोपाध्याय, प्रभागीय प्रमुख, यातायात व परिवहन विभाग, मुख्य अतिथि श्री एस.एन. श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त पुलिस (यातायात) का स्वागत करते हुए

श्री एस.एन. श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त पुलिस (यातायात) एवं मुख्य अतिथि प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए

सबवे और उपरिगामी सेतु का निर्माण करते समय इनके उपयोगकर्ताओं की कठिनाइयों और सुरक्षा को भी देखा जाना चाहिए। सड़क पार करने के लिए सात फुट ऊंचाई का बॉक्स गार्डन बनाया जाना चाहिए जो तीन फुट सड़क स्तर से नीचे तथा चार फुट ऊपर हो सकता है। इसके द्वारा लोग सीधे सड़क पार कर सकते हैं तथा उसके ऊपर से आने-जाने वाले वाहनों को सड़क के दोनों ओर की स्थिति भी दिखाई दे सकती है।

सड़क सुरक्षा की दृष्टि से सड़कों पर यातायात की स्थिति की जानकारी सड़क उपयोगकर्ता को घर से निकलने से पहले मिल जाए तो उपयोगकर्ता ज्यादा सुरक्षित ढ़ंग से व्यवहार कर सकता है। इसके लिए लोगों तथा सरकारी संस्थाओं दोनों का परस्पर सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने वाहन चालक को लाइसेंस देने की प्रक्रिया तथा नवीनीकरण करने में सुधार लाने की आवश्कता बताई। इसके लिए दिल्ली व पड़ोसी राज्यों के चालक लाइसेंस धारकों का आंकड़ा आधार तैयार करने तथा समय-समय पर उनकी जांच एवं चालक के स्वास्थ्य की जांच करने का महत्व बताया। सड़क सुरक्षा का विषय सभी लोगों के सहयोग से ही कारगर हो सकता है। इसके लिए स्कूलों के पाठ्यक्रमों में प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सड़क सुरक्षा संबंधी जानकारी सम्मिलित की जानी अपेक्षित है। इस ओर प्रयास चल रहा है तथा आशा है कि यह शीघ्र ही सभी स्तर के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बन जाएगा।

संस्थान के यातायात व परिवहन प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस. गंगोपाध्याय ने अपने उद्बोधन में कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सड़क सुरक्षा तो जीवन का एक हिस्सा है। सवेरे काम पर निकलने से लेकर शाम को घर लौटने तक हम अपनी यात्रा के संबंध में आश्वस्त नहीं होते। यह माना जाता है कि अधिकांश सड़क दुर्घटनाएं ड्राइवर की गलती के कारण होती हैं। क्या इस धारणा पर पूरा विश्वास किया जा सकता है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर हम आज यहां उपस्थित विशेषज्ञों की चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से पाना चाहेंगे। कार्यक्रम का संचालन श्री टी.के. आमला, प्रभागीय प्रमुख, आईएलटी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनंगपाल, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने किया।

डॉ. परमवीर सिंह आहूजा को वर्ष 2005 का वासविक पुरस्कार

डॉ. परमवीर सिंह आहूजा, निदेशक, हिमालय जैवसम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति तथा समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम से 16 अगस्त 2008 को मुम्बई में आयोजित एक समारोह में कृषि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके अनुसंधान योगदान के लिए वर्ष 2005 का वासविक पुरस्कार प्राप्त किया।

यह पुरस्कार विविधलाक्षी औद्योगिक संशोधन विकास केन्द्र, एक अलाभकारी, गैरसरकारी संगठन, जिसकी स्थापना वर्ष 1973 में की गयी थी तथा जिसे पटेल एक्स्ट्रूशन ग्रुप द्वारा संचालित किया जा रहा है, के द्वारा दिये गये।

डॉ. पी.एस. आहूजा ने 13 अप्रैल 1998 को आईएचबीटी के निदेशक का कार्यभार संभाला। आरम्भ से ही डॉ. आहूजा ने विद्वतापूर्ण अभिक्षमता का प्रदर्शन किया। उन्होंने बीएससी (एग्री.) के लिए नेशनल मैरिट स्कॉलरशिप तथा एमएससी (एग्री.) के लिए जूनियर रिसर्च फैलेशिप प्राप्त की।

उनके कार्य से ऐसे दो महत्वपूर्ण एलआर गुणसूत्रों की पहचान हुई जिन्हें बाद में गेहूं पर आईसीएआर के ऑल इंडिया कोआर्डिनेटेड प्रोगाम के द्वारा बहुप्रजनन कार्यक्रम में विकास के लिए कॉमनवैल्थ फैलोशिप प्राप्त हुई तथा उन्होंने वर्ष 1983 में नॉटिंघम यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. ई.सी. कोकिंग के मार्गदर्शन में अपना डाक्टरेट कार्य पूर्ण किया।

उन्होंने ही पहली बार यह स्थापित किया कि पत्ती के आधार के कैलस का कोशिका सस्पेंशन सम्पूर्ण पौधे के पुनरुद्भवन में सक्षम होता है और पुनरुद्भव एन्युप्लॉइड़ युक्त सोमाक्लोनल वेरियेशन हैं।

डॉ. परमवीर सिंह आहूजा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से पुरस्कार ग्रहण करते हुये

उन्होंने विजिटिंग साइंटिस्ट फैलोशिप के अन्तर्गत पोस्ट डॉक्टरेट कार्य हेतु कनाडा तथा यूएसए का भ्रमण किया। भारत में लौटकर डॉ. आहूजा ने सीमैप, लखनऊ में वैज्ञानिक-सी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया तथा प्लान्ट टिशूकल्चर डिवीजन के प्रमुख बने। उन्होंने अवसंरचना तथा अनुसंधान एजेण्डा का विकास किया। उनके अनुसंधान कार्यों के परिणामस्वरूप भारत में **साइमोपोगोन विन्टेरियानस** की पहली सोमाक्लोनल प्रजाति **सीमैप बायो-13** को विकसित तथा जारी किया गया। उन्होंने ट्रोपेन एल्केलॉइड में सोमेटिक हाब्रिडाइजेशन पर प्रशंसनीय कार्य किया जिससे 4 सोमेटिक हाइब्रिडों का विकास हुआ।

उन्होंने महत्वपूर्ण ढ़ंग से कुछ दुर्लभ विलुप्त होती तथा विनाश की ओर बढ़ती अल्पाइन हिमालय प्रजाति के ऊत्तक प्रवर्धन संचरण की दिशा में भी अपना योगदान दिया।

डॉ. आहूजा ने निदेशक पद का कार्यभार सभांलने के पश्चात आईएचबीटी को एक चाय अनुसंधान संस्थान से पादप विज्ञान में अग्रणी अनुसंधान करने वाले विश्वस्तरीय संस्थान में परिवर्तित कर दिया। उनके नेतृत्व में संस्थान ने जैवसंसाधनों तथा जैवविविधता संरक्षण की सतत उपयोगिता पर केन्द्रित उद्देश्य का विकास किया। उन्होंने मौलिक अनुसंधान सुविधाओं को सशक्त बनाया तथा विशेषकर प्लान्ट जीनोमिक्स, प्रोटियोमिक्स, मेटाबोलोमिक्स तथा नैनोबायोलॉजी के क्षेत्र में नवीन द्वार खोले।

उन्होंने जीआईएस प्लेटफॉर्म के साथ एकीकृत मैपिंग सुविधा का विकास किया जिसके फलस्वरूप हिमाचल प्रदेश के आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजाति विशेष मैप का सृजन हुआ।

उन्होंने प्राकृतिक पादप उत्पादों पर हो रहे कार्यों को सशक्त किया। उन्होंने एक प्रतिष्ठित चाय नेटवर्क कार्यक्रम को सहयोग दिया तथा नेशनल टी जर्मप्लाज्म के चित्रण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की।

उन्होंने 1 जुलाई 2008 से केन्द्रीय औषधीय तथा संगध पादप संस्थान के निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाल लिया है।

श्री प्रशान्त बर्वे को वासविक पुरस्कार

श्री प्रशान्त बर्वे, प्रमुख, प्रक्रिया विकास एवं अभियांत्रिकी ग्रुप, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे को रसायन विज्ञान तथा रासायनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए योगदान के लिए वर्ष 2003 का वासविक पुरस्कार प्रदान करने हेतु चयन किया गया। श्री बर्वे ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान महत्वपूर्ण फाइन रसायनों और बल्क रसायनों हेतु अनेक अभिनव एवं कार्यक्षम प्रक्रियाएं विकसित की हैं। इन रसायनों का या तो निर्यात होता है या विश्व में केवल कुछ ही कम्पनियों द्वारा इनका उत्पादन किया जाता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से पुरस्कार लेते हुए श्री प्रशान्त बर्वे, साथ में खड़े हैं डॉ. मोहन भाई पटेल, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स, वासविक फाउण्डेशन

एक्रीलएमिडो टेरसियरी ब्युटाइल सल्फोनिक अम्ल (एटीबीएस) एक स्पेशलटी एकलक है जिसका प्रयोग बहुलन प्रक्रियाओं में सह-एकलक के रूप में किया जाता है। एटीबीएस का प्रयोग पॉली फाइबर जैसे संश्लिष्ट तन्तुओं हेतु रंजक कार्यों में किया जाता है। जल में घुलनशील एकलक के रूप में एटीबीएस का प्रयोग अधिक मात्रा में तेल के उत्पादन जैसे कार्यों में होता है।

एनसीएल के प्रक्रिया डिजाइन एवं विकास ग्रुप में कार्यरत श्री बर्वे एवं उनके दल ने एटीबीएस बनाने की एक अभिनव प्रक्रिया विकसित की है जिसे पेटेण्ट द्वारा संरक्षित किया गया है। इस प्रक्रिया को एक किलोग्राम के उत्पादन स्तर तक बढ़ाया गया है। एक अनवरत/सतत प्रक्रिया भी विकसित की गई है। इन दोनों प्रक्रियाओं को व्यापारिक दृष्टि से लागू करने के लिए विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (वीओएल), मुम्बई को हस्तांतरित कर दिया गया है।

यह भारत में एटीबीएस के उत्पादन का पहला संयंत्र है। पूरे विश्व में केवल एक या दो ही निर्माता एटीबीएस का उत्पादन करते हैं। श्री बर्वे के नेतृत्व में एनसीएल के दल ने संयंत्र को स्थापित करने तथा तकनीकी एवं विश्लेषिक स्टाफ को प्रशिक्षित करने में सहायता प्रदान की। एनसीएल ने लगातार एक वर्ष तक संयंत्र सम्बन्धी प्रारम्भिक समस्याओं को सुलझाने में तथा अपेक्षित गुणवत्ता और वांछित उत्पादकता के साथ उत्पाद को प्राप्त करने में विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड को तकनीकी सहायता प्रदान की है। इस संयंत्र की वर्ष 2002 में वार्षिक उत्पादन क्षमता पहले 2000 टन थी जिसे अब बढ़ाकर 12000 टन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड की अवसंरचना के विस्तार के बाद यह विश्व में दूसरी सबसे बड़ी एटीबीएस उत्पादक कम्पनी बन जाएगी। इस प्रौद्योगिकी का चयन वर्ष 2005 में सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार हेतु किया गया था। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने 16 अगस्त, 2008 को श्री बर्वे को यह पुरस्कार प्रदान किया। इसके अन्तर्गत नकद राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान स्थापना दिवस

दिनांक 25 जुलाई 2008, को केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान का 61वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। एल.वी. प्रसाद आई इंस्टीट्यूटी, हैदराबाद के निदेशक (अनुसंधान) एवं कोशिकीय एवं आण्विक जीवविज्ञान केन्द्र (सीसीएमबी), हैदराबाद के पूर्व निदेशक प्रोफेसर डी. बालसुब्रमण्यिन इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि महोदय ने सीकरी स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर प्राचीनकाल से आज तक आनुवंशिकी के इतिहास पर अपना व्याख्यान दिया। अपने भाषण में उन्होंने आधुनिक परिदृश्य में चिकित्सा एवं फोरेंसिक साइंस के क्षेत्र में आनुवंशिकी के महत्व का भी उल्लेख किया।

प्रोफेसर बालसुब्रमण्यिन ने प्राचीन वेदों के पुरुषसूक्तम में से कुछ पंक्तियों का उदाहरण देते हुए आनुवंशिकी एवं वंशानुक्रम की धारणा के प्राचीन संदर्भों पर प्रकाश डाला । उन्होंने गालटन द्वारा काले एवं सफेद खरगोशों के रक्त के नमूनों के अग्रगामी परीक्षणों सम्बन्धी श्रेष्ठ प्रयोगों का वर्णन किया। उन्होंने मेंडल के मटर के पौधों सम्बन्धी प्रयोगों पर भी विस्तृत चर्चा की। उन्होंने विशिष्टताओं के अधिग्रहण तथा इन्हें अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के सिद्धान्त पर भी संक्षिप्त में चर्चा की। आनुवंशिकी के क्षेत्र में डब्ल्यू जोहनसन, डब्ल्यू सलटन एवं मार्गन द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का भी उन्होंने उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि क्रोमोसोम सेल से डीएनए के अध्ययन ने ही आनुवंशिकी अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एक नए युग का आरम्भ किया।

अपने व्याख्यान के अंतिम चरण में उन्होंने प्रतिवर्तित आनुवंशिकी के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि यहां विशिष्टता केवल जीन का अध्ययन करना मात्र नहीं है अपितु जीन के अध्ययन के उपरान्त सह-समबद्धता के लिए डेटा बैंक के साथ इसकी तुलना करना भी है।

आज आनुवंशिकी विज्ञान का कई क्षेत्रों में अत्यधिक प्रयोग होने लगा है। इसके उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण प्रयोग हैं वैधानिक पितृत्व निर्धारण, नवजात शिशु की वैधानिक पहचान एवं वंशानुगत रोगों का समाधान निकालने में आनुवंशिकी का प्रयोग आदि हैं। अन्त में संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ एक वृहद व रोचक

प्रो. ए.के. शुक्ला, निदेशक, सीकरी स्वागत सम्बोधन देते हुये

प्रो. डी. बालसुब्रमण्यिन सीकरी स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुये

चर्चा के साथ उन्होंने अपना व्याख्यान समाप्त किया।

इस समारोह के प्रारम्भ में, प्रोफेसर ए.के. शुक्ला ने अपने स्वागत भाषण में 60 साल पूर्व के उस दिन का उल्लेख किया जब भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा डॉ. एस.एस. भटनागर एवं डॉ. आर.एम. अलगप्पा चेट्टियार की उपस्थिति में सीकरी की स्थापना की गई थी। उन्होंने कारैकुड़ी में सीकरी की स्थापना में डा. आर.एम. अलगप्पा चेट्टियार के योगदान का उल्लेख किया और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इसके अतिरिक्त इन 60 वर्षों के दौरान सीकरी की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. वी. यज्ञरामण, वैज्ञानिक जी तथा अध्यक्ष, आयोजित समिति द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दोपहर को प्रोफेसर डी. बालसुब्रमण्यिन ने केन्द्रीय उपकरण सुविधा का दौरा किया, तत्पश्चात उन्होंने सीकरी के अन्तर्गत बी.टेक (रसायन एवं विद्युतरसायन अभियांत्रिकी पाठ्यक्रम के छात्रों को एक परस्पर चर्चा सत्र में भी सम्बोधित किया। उन्होंने अपने इस दौरे की स्मृति स्वरूप सीकरी के परिसर में एक पौधा भी लगाया। शाम को, कलैकोविल डांस अकादमी के छात्रों द्वारा शास्त्रीय नृत्य का आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि, सीकरी के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों ने इस कार्यक्रम का आनन्द उठाया। हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में संस्थान के सभी कर्मचारियों को एक-एक स्मृति चिह्न भी प्रदान किया गया।

निस्टैड्स में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान (निस्टैड्स), नई दिल्ली में 1 से 15 सितंबर, 2008 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान संस्थान के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी-अंगेजी शब्दज्ञान प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता तथा क्विज प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिनमें संस्थान के 25 अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह दिनांक 15/09/2008 को शाम 3 बजे संस्थान के कान्फ्रेंस हॉल में आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर डॉ. कुलदीप शर्मा, मुख्य संपादक तथा प्रभारी, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एंड ट्रेनिंग, सूचना तथा कृषि प्रकाशन निदेशालय (आई.सी.ए.आर.), पूसा, नई दिल्ली को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। श्री एस. एस. सोलंकी, वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर मंच पर बैठे हैं श्री रामेश्वर दास, डॉ. कुलदीप शर्मा, डॉ. पी. ब्यानार्जी एवं श्री एस.एस. सोलंकी

निस्टैड्स के कार्यकारी निदेशक डॉ. पी. ब्यानार्जी ने हिंदी पखवाड़ा आयोजन के महत्व पर विचार व्यक्त किए तथा सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास किए जाने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि डॉ. कुलदीप शर्मा ने हिंदी पखवाड़ा आयोजन के संबंध में विचार व्यक्त किए तथा उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी भारत देश की एक राष्ट्रभाषा तभी बन पाएगी जब हम अन्य भारतीय भाषाओं में प्रचलित शब्दों को बिना किसी संकोच के हिंदी भाषा में अपना लेंगे।

इसके बाद निदेशक तथा मुख्य अतिथि ने 1 से 15 सितंबर, 2008 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा के दौरान संस्थान के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं और कार्यालय में पिछले एक वर्ष के दौरान पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से हिंदी में सरकारी कार्य करने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए।

निस्केयर में हिन्दी पखवाड़ा समारोह सम्पन्न

प्रतिवर्ष संस्थान में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि करने तथा कार्मिकों में अपना कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने के प्रति जागरूकता लाने के लिए राजभाषा इकाई द्वारा हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) के उपलक्ष्य में हिन्दी सप्ताह/पखवाड़े का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष भी संस्थान में 8 सितम्बर से 22 सितम्बर 2008 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े का प्रारम्भ प्रतिवर्ष की भांति एक अपील से किया गया जिसमें सभी कार्मिकों से अनुरोध किया गया कि वे अपना अधिकतम कार्यालयी कार्य हिन्दी में कर इस पखवाड़े को सफल बनाएं।

पखवाड़े के दौरान संस्थान में चार प्रतियोगिताएं यथा **समाचार वाचन प्रतियोगिता**, **वाद-विवाद प्रतियोगिता**, **कविता-पाठ प्रतियोगिता** तथा **नोटिंग/ड्रॉफ्टिंग** प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने सक्रिय प्रतिभागिता का प्रदर्शन किया। हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन 19 सितम्बर 2008 को किया गया। इस समारोह में युवा हास्य कवि श्री प्रवीण शुक्ल को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

समापन समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात प्रभारी, राजभाषा श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा राजभाषा रिपोर्ट की प्रस्तुति की गयी। प्रभारी, राजभाषा ने अपनी रिपोर्ट में गतवर्ष की राजभाषा गतिविधियों तथा उपलब्धियों के विषय में जानकारी दी।

उन्होंने अपने संक्षिप्त विवरण में संस्थान में राजभाषा संसदीय समिति के निरीक्षण तथा राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2007-08 में प्राप्त की गयी उपलब्धियों की चर्चा की जिसमें उन्होंने संस्थान की वेबसाइट की हिन्दी में उपलब्धता को एक विशेष उपलब्धि बताया। साथ ही उन्होंने राजभाषा के संस्थान में अनुपालन तथा कार्यान्वयन के लिए सभी कार्मिकों के सक्रिय सहयोग के लिए आभार प्रकट करते हुए भविष्य में भी अपना सहयोग सदैव बनाए रखने के लिए निवेदन किया। इसके पश्चात निदेशक, निस्केयर ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी दिवस जैसे समारोह के आयोजन का मूलभूत उद्देश्य कार्यालयी कामकाज

सचिवीय रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए प्रभारी, राजभाषा श्रीमती दीक्षा बिष्ट

श्री एस.के. रस्तोगी, कार्यकारी निदेशक संस्थान के कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि

राजभाषा पत्रिका संचेतना का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री प्रवीण शुक्ल

कविता पाठ प्रस्तुत करते हुए मुख्य अतिथि

श्री जय सिंह मीणा, प्रशासन नियंत्रक कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए

में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने का है। उन्होंने बताया कि इसका लाभ तभी हो सकता है जब हम सभी मिलकर संस्थान में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देकर इसकी उपयोगिता की स्थिति को सुधारकर इसे सही मायनों में राजभाषा का दर्जा प्रदान कर सकें।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक संस्थान होने के कारण हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में हम जो भी कीर्तिमान बनाए, उनका लाभ आम जनता तक पहुंचे। इसके लिए यह आवश्यक है कि विज्ञान तथा तकनीकी साहित्य में सरल भाषाशैली तथा शब्दों का प्रयोग किया जाए ताकि वे आसानी से समझ में आ सकें। उन्होंने यह भी कहा कि यह असम्भव कार्य नहीं है, क्योंकि हमारी शब्द सम्पदा अन्य भाषाओं की तुलना में काफी समृद्ध है।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी भाषाओं को सूचना और प्रौद्योगिकी के साथ भी जोड़ना होगा। यह हमारे लिए अति आवश्यक है क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी भाषाओं का विकास रुक जायेगा। निस्केयर में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति को सन्तोषजनक बताते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों में से बहुत से लक्ष्यों को प्राप्त किया जा चुका है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इस स्थिति को यथावत रखते हुए अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पुरजोर प्रयास किये जायेंगे।

श्रीमती मीनाक्षी गौड़, अनुवादक ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए बताया कि आमंत्रित युवा कवि श्री प्रवीण शुक्ल, हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में अपनी एक विशेष पहचान बना चुके हैं। वे अब तक काव्य गंगा पुरस्कार, व्यंग्य श्री सम्मान, हिन्दी गौरवसम्मान, श्रेष्ठकवि सम्मान, ओमप्रकाश आदित्य सम्मान इत्यादि सम्मानित किये जा चुके हैं।

श्री शुक्लजी को बहुत-सी काव्य कृतियां तथा गीत संग्रह व गद्य कृतियां व यात्रा वृतांत प्रकाशित हो चुके हैं तथा वे बहुत से प्रतिष्ठित हिन्दी समाचार पत्र पंजाब केसरी, दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत में नियमित रूप से हास्य व्यंग्य स्तम्भ लेखन भी करते हैं। उन्होंने एक हजार से भी अधिक कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ

श्री रामस्वरूप, वित्त एवं लेखा अधिकारी धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए

दर्शक दीर्घा का एक दृश्य

तथा मंच संचालन व संयोजन किया है। इसके पश्चात आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री प्रवीण शुक्ल ने संस्थान के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित राजभाषा वार्षिक पत्रिका **संचेतना** का विमोचन किया।

श्री प्रवीण शुक्ल ने निदेशक महोदय द्वारा कही गयी बातों से पूर्ण सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि हमें अपनी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। हिन्दी जैसी कोई अन्य भाषा नहीं। इसमें अपूर्व क्षमता तथा सम्भावना है। उन्होंने अपनी कविताओं से उपस्थित जनसमूह का मनोरंजन तो किया ही, वहीं समाज में व्याप्त विद्रूपताओं से भी परिचय कराया। उन्होंने आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर अपनी व्यंग्यात्मक कविताओं द्वारा कटु प्रहार किये। सभी के द्वारा उनकी कविताओं को सराहा गया।

प्रशासन नियंत्रक महोदय ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हिन्दी 60 करोड़ लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा है। इसमें अपार क्षमता है, अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की।

उन्होंने कहा कि हिन्दी का प्रयोग हमें किसी भी स्तर पर अन्य लोगों से कमतर नहीं बनाता। इसके पश्चात मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय, प्रशासन नियंत्रक तथा वित्त एवं लेखा अधिकारी श्री रामस्वरूप ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गयी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

अन्त में, श्री रामस्वरूप, वित्त एवं लेखाधिकारी ने उपस्थित जनसमूह को अंग्रेजी में काम करने की लत को छोड़कर हिन्दी अपनाने का आग्रह किया। उनके धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में हिन्दी सप्ताह समारोह सम्पन्न

फिल्मों ने भी जगायी हिन्दी की अलख

सीबीआरआई, रूड़की में हिन्दी सप्ताह समापन समारोह का एक दृश्य

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में आयोजित हिन्दी सप्ताह समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे डॉ. शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा **अरूण**। डॉ. शर्मा ने शुक्रवार 19 सितम्बर, 2008 को आयोजित समारोह में कहा कि हिन्दी ने प्रत्येक भारतीय को गौरव का अवसर प्रदान किया और हमें हिन्दी प्रोत्साहन के लिए गतिविधियों की निरन्तरता कायम रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी के विकास के लिए जितने प्रयास किए जाए, कम होंगे। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पूरी गम्भीरता के साथ इस दिशा में सक्रिय प्रयास करने की आवश्यकता है। डॉ. शर्मा ने राजकपूर की फिल्म के चर्चित गीत **मेरा जूता है जापानी-** - का उल्लेख करते हुए कहा कि इस गीत ने लोगों के दिलों को छुआ और यह गीत विदेशियों तक की जुबां पर चढ़ गया।

डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, वरिष्ठतम वैज्ञानिक-जी ने समारोह की अध्यक्षता की तथा संस्थान में चल रहे हिन्दी के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग को केवल एक सप्ताह तक ही नहीं, वर्ष भर अपने जीवन में प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया। श्री राजकुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक-एफ ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। श्री सुभाष त्यागी, प्रशासन नियंत्रक ने सभी का स्वागत किया तथा मंच संचालन वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी व संयोजक श्री राजेश चन्द सक्सेना ने किया। इस अवसर पर संस्थान में वर्ष भर सरकारी कामकाज मूलरूप से हिन्दी में करने के लिये प्रोत्साहन योजना वर्ष 2007-08 हेतु पुरस्कार मुख्य अतिथि ने प्रदान किये।

संस्थान में हिन्दी भाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी/अंग्रेजी शब्द ज्ञान व अनुप्रयोग प्रतियोगिता, हिन्दी व्याकरण एवं वर्तनी प्रतियोगिता, हिन्दी में भाषा प्रवाह अभिव्यक्ति प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और विजेताओं को पुरस्कार प्रदाय किये गये। श्री सुभाष त्यागी को **चिकित्सा प्रतिपूर्ति सुविधा विषय पर; सीएसआईआर की क्रय प्रक्रिया, समस्या एवं समाधान पर श्री ब्रजेश शर्मा ने व्याख्यान दिये। कछुए और खरगोश की कहानी एक नये रूप में** विषय पर श्री सुधीर शर्मा ने व्याख्यान दिया और तीनों को व्याख्यान हेतु स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अन्त में श्री राजेश चन्द सक्सेना, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रोफेसर इब्राहीम, श्री हरपाल सिंह, एडवोकेट, श्री पृथ्वी सिंह विकसित, श्री वीरेन्द्र गुप्ता एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (पूर्व नाम आर आर एल), जोरहाट में हिन्दी सप्ताह/दिवस समारोह

अन्य वर्षों के भांति इस वर्ष भी उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (पूर्व नाम आर आर एल), जोरहाट में हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन 12 सितम्बर 2008 किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. डी.सी. गोस्वामी ने की एवं संचालन राजभाषा प्रभारी श्री अजय कुमार ने किया।

नार्थ इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, शिलांग के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ. दिनेश कुमार चौबे समारोह के मुख्य अतिथि थे। डॉ. चौबे असमियां रामायण एवं हिन्दी रामायण के तुलनात्मक अध्ययन पर महत्वपूर्ण शोध कार्य कर चुके हैं। इन्होंने अपने व्याख्यान में देश के सभी प्रदेशों में त्रिभाषा का अनुसरण करने पर बल दिया। हिन्दीतर क्षेत्रों में व्यक्ति स्वतः त्रिभाषा का अनुकरण कर रहे हैं अर्थात एक उनकी मातृभाषा हैं दूसरी हिन्दी जानने का प्रयास करते हैं और अंग्रेजी सीखते हैं क्योंकि यह अन्तरराष्ट्रीय भाषा है। इसी प्रकार हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों को भी हिन्दी के साथ देश की किसी एक क्षेत्रीय भाषा का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिकों से अपील की कि वे भी अपना अनुसंधान जन भाषा हिन्दी एवं स्थानीय भाषा में करें ताकि विकास कार्य का उपयोग जन मानस तक पहुंच सके। अंग्रेजी तो केवल मुट्ठी भर लोगों की भाषा है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. दिनेश कुमार चौबे, रीडर, हिन्दी विभाग, नार्थ-ईस्टर्न हिन्दू विश्वविद्यालय, शिलांग

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पी.बी. कांजीलाल ने उपस्थित सदस्यों का अपने भाषण से स्वागत किया। समारोह के सभापति के रूप में प्रभारी निदेशक डॉ. गोस्वामी ने संस्थान में राजभाषा विकास के लिए चल रही गतिविधियों का ब्यौरा दिया एवं संविधान का उल्लेख करते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए अपील की। समारोह का समापन हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत करके हुआ। रुचिकर एवं प्रोत्साहनवर्द्धक कई प्रकार की हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी क्विज, हिन्दी श्रुत-लेखन, लेख-लेखन आदि 8 से 12 सितम्बर तक आयोजित की गयीं। इनमें भाग लेने वाले अधिक से अधिक कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 2007-08 के दौरान संस्थान में सबसे अच्छा कार्य करने वाले कर्मचारी को भी पुरस्कृत किया गया। भारत सरकार द्वारा यहां संचालित निर्धारित हिन्दी परीक्षा पास करने वालों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किया गया। संस्थान के विभिन्न प्रभागों/अनुभागों के राजभाषा प्रतिनिधियों को सुविधा के लिए अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष भी प्रदान किया गया। अन्त में श्री सन्तोष कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीएसआईओ, चण्डीगढ़ में हिन्दी दिवस समारोह

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इन्टरनेट पर अपनी व्यापक उपस्थिति दर्ज करवा चुकी हिन्दी की स्थिति अब सरकारी कार्यालयों में भी बेहतर हो रही है। यह विचार डॉ. चन्द्र त्रिखा, वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक ने 12 सितम्बर, 2008 को संगठन में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कम्प्यूटर पर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सरल पद्धति यूनिकोड की विस्तृत जानकारी देते हुए सरकारी कार्यालयों में इसके व्यापक प्रयोग करने पर बल दिया।

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. बी.एस. चवन सम्बोधित करते हुए

हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर श्रुतलेख प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी

संगठन स्टाफ को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए दिनांक 1-12 सितम्बर, 2008 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। डॉ. बी.एस. चवन, प्रमुख साइकेट्री विभाग, राजकीय चिकित्सा कॉलेज अस्पताल ने सीएसआईओ में हिन्दी पखवाड़े को औपचारिक रूप से प्रारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन में तनाव के कारण एवं निवारण के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई।

संगठन में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर इस वर्ष 10 हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्टाफ के लिए विशेष रूप से पेपर रीडिंग व शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 100 स्टाफ कर्मियों ने भाग लिया तथा 33 कर्मियों को पुरस्कृत किया गया। संगठन के दो कर्मियों श्री अमरजीत तथा श्री रमेश चन्द, सहायक (सामान्य) को हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए रुपये 500.00 (प्रत्येक को) की राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। संगठन में गत 4 वर्षों से स्टाफ के बच्चों द्वारा कक्षा 4 से 12 में हिन्दी विषय में निर्धारित अंक प्राप्त करने पर रु. 200/- का नकद पुरस्कार प्रदान करने की योजना भी लागू की गई है। इस वर्ष इसकी प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर रु. 250/- प्रति विद्यार्थी कर दी गई तथा इसमें 41 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ ने वर्ष 2008 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं स्टाफ कर्मियों के बच्चों को नगद पुरस्कार प्रदान किए। श्री एम.आर. मसान, प्रशासन नियंत्रक ने कार्यक्रम के अन्त में औपचारिक रूप में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बच्चों के लिए प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत एक विद्यार्थी को पुरस्कृत करते हुए निदेशक

मुख्य अतिथि हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में से एक के विजेता को पुरस्कृत करते हुए

सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ में दिनांक 01.09.08 से 15.09.08 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं हिन्दी पत्र/आवेदन लेखन प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता - स्टाफ के सदस्यों के बच्चों के लिये, हिन्दी में हस्ताक्षर प्रतियोगिता, विज्ञान पर हिन्दी में सेमीनार प्रतियोगिता आयोजित की गईं।

दिनांक 15.09.08 को संस्थान के सभागार में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। संस्थान के कार्यकारी निदेशक, डॉ. तपन चक्रवर्ती, ने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस समारोह का मुख्य आकर्षण थी हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता जिसका विषय था **- ओलम्पिक खेलों में भारत की सुनहरी विजय अन्य खेलों के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी**। जिसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की। यह प्रतियोगिता संस्थान के सभी वर्गों के सदस्यों में विशेष लोकप्रिय रही। पक्ष व विपक्ष के प्रतियोगियों ने अपने विचारोत्तेजक तथ्य रखे और अन्त में विपक्ष का पलड़ा भारी रहा।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन के पश्चात डॉ. तपन चक्रवर्ती, कार्यकारी निदेशक के द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित विज्ञान पर हिन्दी में सुलेख प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण, हिन्दी शब्दावली, हिन्दी पत्र/आवेदन लेखन, हिन्दी में हस्ताक्षर प्रतियोगिता, हिन्दी में कविता पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को तथा वर्षभर की गतिविधियों के विजेताओं को व हिन्दी में मूल काम काज की प्रोत्साहन योजना में भाग लेने वाले सदस्यों को पुरस्कार वितरित किए तथा इस अवसर पर संस्थान के सदस्यों हिन्दी में अधिक कार्य करने को प्रेरित करते हुए कार्यकारी निदेशक ने संदेश दिया।

उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया की भले ही हम अलग-अलग भाषा भाषी हैं पर हिन्दी सारे देश को एक सूत्र में पिरोती है तथा उन्होंने अच्छा साहित्य पढ़ने पर भी बल दिया कि इसके लिए संस्थान के पुस्तकालय में हिन्दी की बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त **सीएसआईआर के विज्ञान में युवा नेतृत्व कार्यक्रम** की तरह वर्तमान शिक्षा वर्ष से आरम्भ की गई स्कूली छात्रों के लिए हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार प्रदान करने की प्रोत्साहन योजना के तहत भी इमटैक सदस्यों के बच्चों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया तथा हिन्दी में तकनीकी पत्र पढ़ने वाले वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। श्री स्वतन्त्र कुमार सदाना, प्रशासन नियंत्रक ने वाद-विवाद के विषय पर रोचक तरीके से प्रकाश डालते हुए प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया तथा ऐसे आयोजनों की व्यवहारिकता व राजभाषा कार्यान्वयन में उनकी भूमिका पर बल दिया तथा सभी से आह्वान किया कि वे अपने सरकारी काम काज में हिन्दी को अपनाएं और संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करें।

श्री सदाना के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन सुश्री नवनीत आनन्द, हिन्दी अधिकारी ने किया। हिन्दी में तकनीकी पत्र प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार तथा इमटैक सदस्यों के बच्चों द्वारा हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा

फोनः 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्रामः PUBLIFORM. New Delhi; फैक्सः 25847062

ई-मेलः deeksha@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें